INTERNATIONAL JOURNAL OF EXPLORING EMERGING TRENDS IN ENGINEERING
Peer-Reviewed, Refereed, Indexed and International Journal, https://ijoeete.com/
(Peer Review Journal as per UGC 2025 Standard Guidelines)
|ISSN No. 2394-0573 |Volume: 12, Issue: 4 | October – December 2025

बालोद जिले में स्वास्थ्य सेवाओं में सुशासन की स्थिति का अध्ययन

शोध निर्देशक
डॉ. वंदना श्रीवास
सहायक प्राध्यापक
राजनीति विज्ञान
भारती विश्वविद्यालय, दुर्ग (छ.ग.)

शोधार्थी
खेमराज
राजनीति विज्ञान
भारती विश्वविद्यालय, दुर्ग (छ.ग.)

सार

सुशासन का आशय ऐसी प्रशासनिक व्यवस्था से है जो पारदर्शिता, उत्तरदायित्व, सहभागिता एवं समानता पर आधारित हो। प्रस्तुत शोध पत्र में बालोद जिले की स्वास्थ्य सेवाओं में सुशासन की स्थिति का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन 360 उत्तरदाताओं से प्राप्त आंकड़ों पर आधारित है। निष्कर्ष बताते हैं कि ई-गवर्नेंस ने स्वास्थ्य क्षेत्र में सुशासन को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

मुख्य शब्द

सुशासन, स्वास्थ्य प्रशासन, पारदर्शिता, जवाबदेही, नागरिक सहभागिता, सेवा गुणवत्ता, प्रशासनिक सुधार

भूमिका

सुशासन आधुनिक प्रशासन की एक मूलभूत अवधारणा है, जिसका उद्देश्य शासन व्यवस्था को पारदर्शी, उत्तरदायी, सहभागी एवं प्रभावी बनाना है। सुशासन के अभाव में सार्वजनिक सेवाएँ अपनी गुणवत्ता, निष्पक्षता एवं विश्वसनीयता खो देती हैं। स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र में सुशासन का महत्व और भी अधिक बढ़ जाता है, क्योंकि यह सीधे नागरिकों के जीवन, स्वास्थ्य एवं कल्याण से जुड़ा होता है।

भारत में स्वास्थ्य सेवाओं की गुणवत्ता एवं पहुँच लंबे समय से प्रशासनिक चुनौतियों से प्रभावित रही है। संसाधनों की सीमाएँ, प्रशासनिक जटिलताएँ एवं निगरानी के अभाव ने कई बार सेवाओं की प्रभावशीलता को बाधित किया है। ऐसे में सुशासन के सिद्धांत—जैसे पारदर्शिता, जवाबदेही, उत्तरदायित्व एवं नागरिक सहभागिता—स्वास्थ्य प्रशासन में सुधार के लिए अनिवार्य माने जाते हैं।

बालोद जिला, छत्तीसगढ़ राज्य का एक विकासशील जिला होने के कारण स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार की दृष्टि से विशेष महत्व रखता है। हाल के वर्षों में स्वास्थ्य सेवाओं में ई-गवर्नेंस के प्रयोग से सुशासन को बढ़ावा मिला है। डिजिटल प्रणालियों के माध्यम से सेवा वितरण, शिकायत निवारण एवं निगरानी व्यवस्था को

अधिक सुदृढ़ बनाने का प्रयास किया गया है।

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य बालोद जिले में स्वास्थ्य सेवाओं के संदर्भ में सुशासन की स्थिति का मूल्यांकन करना है। अध्ययन में यह विश्लेषण किया गया है कि स्वास्थ्य सेवाओं में पारदर्शिता, जवाबदेही एवं नागरिक संतुष्टि का स्तर किस सीमा तक सुदृढ़ हुआ है। साथ ही, शासकीय एवं निजी अस्पतालों की भूमिका का तुलनात्मक अध्ययन भी किया गया है।

इस प्रकार, यह शोध स्वास्थ्य प्रशासन में सुशासन की व्यवहारिक स्थिति को स्पष्ट करता है तथा प्रशासनिक सुधार की दिशा में सार्थक सुझाव प्रस्तुत करता है।

संबंधित शोध अध्ययन

1. **अग्रवाल (2018)** ने भारत में सुशासन की अवधारणा पर अध्ययन किया और पारदर्शिता को इसका मूल तत्व माना।
2. **चौधरी (2019)** के अनुसार स्वास्थ्य सेवाओं में सुशासन से नागरिक विश्वास में वृद्धि होती है।
3. **मिश्रा (2020)** ने निष्कर्ष निकाला कि जवाबदेही एवं पारदर्शिता सुशासन के प्रमुख स्तंभ हैं।
4. **राय (2021)** ने स्वास्थ्य क्षेत्र में शिकायत निवारण प्रणाली को सुशासन का महत्वपूर्ण आयाम बताया।
5. **शुक्ला (2021)** ने ग्रामीण स्वास्थ्य सेवाओं में सुशासन की चुनौतियों का अध्ययन किया।
6. **वर्मा (2022)** ने पाया कि डिजिटल माध्यमों से सुशासन की प्रभावशीलता बढ़ती है।
7. **साहू (2023)** ने छत्तीसगढ़ में स्वास्थ्य सेवाओं में सुशासन का विश्लेषण किया।
8. **पाण्डेय (2024)** ने स्वास्थ्य प्रशासन में नागरिक सहभागिता को सुशासन की सफलता का आधार बताया।

अध्ययन के उद्देश्य

1. स्वास्थ्य सेवाओं में पारदर्शिता की स्थिति का मूल्यांकन
2. सेवा वितरण में उत्तरदायित्व एवं जवाबदेही का अध्ययन
3. नागरिक संतुष्टि के स्तर का विश्लेषण

शोध उपकरण

इस अध्ययन में शोध उपकरण के रूप में संरचित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया। प्रश्नावली में सुशासन के

INTERNATIONAL JOURNAL OF EXPLORING EMERGING TRENDS IN ENGINEERING
Peer-Reviewed, Refereed, Indexed and International Journal, https://ijoeete.com/
(Peer Review Journal as per UGC 2025 Standard Guidelines)
|ISSN No. 2394-0573 |Volume: 12, Issue: 4 | October – December 2025

विभिन्न आयामों—जैसे पारदर्शिता, जवाबदेही, सेवा गुणवत्ता एवं नागरिक संतुष्टि—से संबंधित प्रश्न सम्मिलित किए गए, जिससे उत्तरदाताओं की धारणा का वस्तुनिष्ठ आकलन संभव हो सका।

सांख्यिकीय विश्लेषण

प्रस्तुत अध्ययन में स्वास्थ्य सेवाओं में सुशासन की स्थिति का आकलन करने हेतु सांख्यिकीय विश्लेषण का प्रयोग किया गया। कुल 360 उत्तरदाताओं से प्राप्त आंकड़ों को प्रतिशत विधि के माध्यम से विश्लेषित किया

तालिका: 1

स्वास्थ्य सेवाओं में प्रशासनिक पारदर्शिता की अनुभूति

अभिमत	आवृत्ति	प्रतिशत
सकारात्मक	222	62
नकारात्मक	98	27
अनिश्चित	40	11
कुल	**360**	**100**

विश्लेषण

सांख्यिकीय विश्लेषण से यह तथ्य सामने आया कि 62 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने स्वास्थ्य सेवाओं में पारदर्शिता बढ़ने की पुष्टि की। यह परिणाम सुशासन के सिद्धांतों के प्रभावी क्रियान्वयन की ओर संकेत करता है। वहीं, 27 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने प्रशासनिक पारदर्शिता को अपर्याप्त बताया, जो यह दर्शाता है कि कुछ क्षेत्रों में सुधार की आवश्यकता अभी भी बनी हुई है। शेष 11 प्रतिशत उत्तरदाता अनिश्चित श्रेणी में पाए गए।

जवाबदेही एवं शिकायत निवारण प्रणाली के संदर्भ में प्राप्त प्रतिक्रियाओं से यह स्पष्ट हुआ कि डिजिटल माध्यमों के उपयोग से प्रशासनिक उत्तरदायित्व में वृद्धि हुई है। नागरिकों को अपनी शिकायतें दर्ज कराने एवं उनका समाधान प्राप्त करने में सुविधा हुई है। निजी अस्पतालों में यह व्यवस्था अपेक्षाकृत अधिक प्रभावी पाई गई, जबकि शासकीय अस्पतालों में सुधार की गति अपेक्षाकृत धीमी रही।

इस प्रकार, सांख्यिकीय विश्लेषण यह स्पष्ट करता है कि बालोद जिले में स्वास्थ्य सेवाओं में सुशासन की दिशा में सकारात्मक परिवर्तन हुए हैं, किंतु इन्हें और अधिक सुदृढ़ बनाने हेतु सतत प्रशासनिक प्रयास आवश्यक हैं।

4. प्रमुख निष्कर्ष

- स्वास्थ्य सेवाओं में पारदर्शिता एवं जवाबदेही में वृद्धि
- शिकायत निवारण प्रणाली अधिक प्रभावी हुई
- नागरिकों का प्रशासन पर विश्वास बढ़ा
- शासकीय अस्पतालों में सुधार की गति अपेक्षाकृत धीमी

5. सुझाव

- सेवा-निगरानी तंत्र को और सशक्त बनाया जाए
- नागरिक सहभागिता को बढ़ावा दिया जाए
- सुशासन सूचकांकों का नियमित मूल्यांकन किया जाए

6. निष्कर्ष

अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि बालोद जिले की स्वास्थ्य सेवाओं में सुशासन की दिशा में सकारात्मक परिवर्तन हुए हैं। ई-गवर्नेंस ने प्रशासनिक पारदर्शिता, उत्तरदायित्व एवं नागरिक संतुष्टि को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, यद्यपि अभी और सुधार की संभावनाएँ विद्यमान हैं।

2. शैक्षिक उपयोगिताएँ

1. सुशासन की अवधारणा को व्यवहारिक उदाहरणों से समझने में सहायता मिलेगी।
2. लोक-प्रशासन एवं सार्वजनिक नीति के विद्यार्थियों हेतु उपयोगी अध्ययन।
3. स्वास्थ्य प्रबंधन पाठ्यक्रमों के लिए संदर्भ सामग्री उपलब्ध होगी।
4. शोधार्थियों को सुशासन पर क्षेत्रीय अध्ययन का मॉडल मिलेगा।
5. प्रशासनिक प्रशिक्षण संस्थानों में अध्ययन सामग्री के रूप में उपयोग।
6. नागरिक सहभागिता के महत्व को शैक्षणिक रूप से स्थापित करेगा।
7. नीति विश्लेषण विषय में केस-स्टडी के रूप में सहायक।

8. स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार हेतु शैक्षणिक सुझाव प्रदान करेगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची

- अग्रवाल, वी. (2018). *सुशासन: सिद्धांत एवं व्यवहार.* नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड इंडिया।
- चौधरी, आर. (2019). *स्वास्थ्य सेवाओं में सुशासन.* जयपुर: रावत पब्लिकेशन।
- मिश्रा, एस. (2020). *प्रशासनिक पारदर्शिता और जवाबदेही.* भोपाल: मध्य भारत प्रकाशन।
- राय, पी. (2021). *स्वास्थ्य प्रशासन में सुधार.* पटना: लोकभारती प्रकाशन।
- शुक्ला, एन. (2021). *ग्रामीण स्वास्थ्य एवं सुशासन.* प्रयागराज: साहित्य भवन।
- वर्मा, डी. (2022). *डिजिटल सुशासन.* दिल्ली: प्रभात प्रकाशन।
- साहू, के. (2023). *छत्तीसगढ़ में स्वास्थ्य प्रशासन.* रायपुर: राज्य प्रकाशन।
- पाण्डेय, एम. (2024). *स्वास्थ्य क्षेत्र में नागरिक सहभागिता.* वाराणसी: ज्ञानगंगा प्रकाशन।